जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

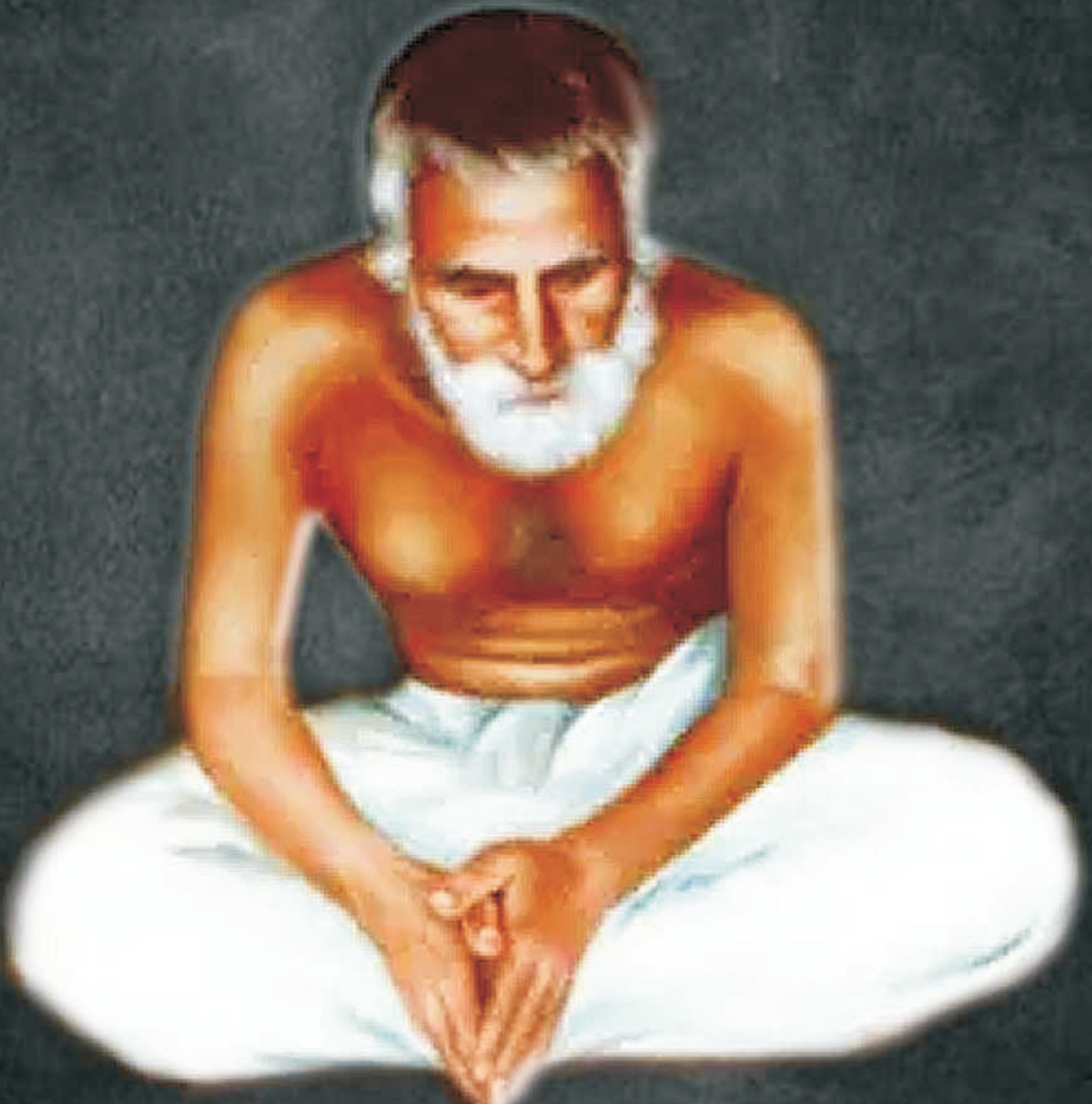

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

अष्टकालीय लीला

श्रीसुन्दरानन्द ठाकुर जी के श्रीपाट से कोई एक 'गोस्वामी नामधारी श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास आकर 'अष्टकालीय-लीला' की शिक्षा लेना चाहता था। पहले दिन श्रील बाबाजी महाराज ने कहा— 'मेरे पास अभी समय नहीं है, समय होने पर आपको बताऊँगा। जितनी बार ही वह

'***गोस्वामी' नामधारी व्यक्ति बाबाजी महाराज के पास आकर अष्टकालीय-लीला के विषय में पूछता, उतनी बार ही बाबाजी महाराज यह एक ही उत्तर देते। अन्त में वह गोस्वामी परेशान होकर चला गया। उसी दिन रात्रि 10 बजे बाबाजी महाराज स्वयं ही बोलने लगे "एक कौड़ी गुम हो जाने पर जिस व्यक्ति के प्राण व्याकुल हो उठते हैं, वह व्यक्ति अष्टकालीय भजन की शिक्षा लेगा! चाहे किताब पढ़ने से अष्टकालीय लीला के विषय में

जानकारी हो जाये लेकिन सिद्धदेह कैसे प्राप्त होगा? वह पुस्तक पढ़ने से नहीं होता। यह सब बातें साधारण पुस्तकों में प्रकाशित होने के कारण जगत का जंजाल और भी बढ़ रहा है। लोग मचान बनाकर दो मंजिल के ऊपर चढ़ जाते हैं और वहाँ विष्ठा त्याग करते हैं।

मेरे पास कितने लोग आते हैं, लेकिन एक भी ठीक नहीं मिल पाता, सभी मुझे लिए आते हैं। जो अष्टकालीय लीला की

शिक्षा लेगा, उसे सबसे पहले सभी असत्संग छोड़कर साधुसंग में निरन्तर हरिनाम करना होगा। निर्जन में या अपने मतलब के अनुसार हरिनाम का ढोंग करने से ही माया–पिशाची घेर लेती है। साधुसंग में नाम ही रूप, गुण और लीला के रूप में आत्मप्रकाशित होते हैं। जिनका नाम में विश्वास नहीं है, वे सभी दुर्भागे लोग पृथक्–भाव से अष्टकालीय–लीला की शिक्षा लेने की दुर्बुद्धि का पोषण कर अपना अमंगल बुला लेते हैं।

{लोग मचान बनाकर दो मंजिल के ऊपर चढ़ जाते हैं और वहाँ विष्ठा त्याग करते हैं– अर्थात् साधन भजन में अष्टकालीय लीला आदि शिक्षायें लेना बहुत उच्च अधिकार की बात है। लोग अधिकार अर्जन किए बिना ही किताबें पढ़कर या अपने कुछ प्रयास के द्वारा उच्च अधिकार की भूमिका पर चढ़ जाते हैं। लेकिन अन्दर में तो विष्ठा है, अर्थात् कितना अनर्थ है; इसलिए उच्च अधिकार की कथाएँ श्रवन, कीर्तन, स्मरण

करते हुए भी एक साथ अनर्थ की चर्चा भी चलती रहती है– इसको ही कहा गया– 'विष्ठा त्याग करना।' इससे देखा जाता है कि बहुत समय बीत जाने पर भी वह साधक भजन में आगे बढ़ नहीं सका, बल्कि अपना अनर्थ का परिणाम और भी बढ़ा दिया। इसलिए बाबाजी महाराज का आदेश है कि पहले असत्संग त्याग की आदत बनानी है– और तब साधुसंग में निरन्तर रहकर सदा हरिनाम का आश्रय करने से हरिनाम ही उन्हें उच्च अधिकार

में ले जाएँगे। दूसरा प्रयास सभी निरर्थक है। }

श्रीलगुरुदेव